वर्ग - 9 किसलय - 2
राष्ट्रभाषा (R.B)
(1)

मानव बनो

कवि - शिवमंगल सिंह 'सुमन'

शब्दार्थ - भूल = गलती, प्यार = प्रेम, मनुहार = मनौना, विनती, खुशामद, आसरा = सहारा, जरा = थोड़ा, अश्रु = आँसू, हाथ फैलाना = कुछ माँगना, हुंकार = जोरों की आवाज, थराना = काँपना, धरा = पृथ्वी, उफ = दुःख प्रकट करना, विश्व = संसार, हाथ मलना = पछताना, अफसोस करना, जलना = व्यथित होना, भस्म = राख, उर्वरा = उपजाऊ।

व्याख्या -

कवि लोगों को संदेश देता है कि मानव बनने के लिए किसी से प्रेम करना तथा खुशामद या विनती करना भूल है। इससे भी मानव की सबसे बड़ी भूल उस पर भरोसा करना है, क्योंकि सामान्य मानव बनने के लिए स्वाभिमानी तथा आत्मनिर्भर होना जरूरी है। इसलिए कवि लोगों को सलाह देता है कि मानव स्वाभिमानी बनो परमुखापेक्षी नहीं।

कवि किसी को न तो अपना दुःख, पीड़ा, कष्ट या मजबूरी प्रकट करने की सलाह देता है और न ही किसी के समक्ष गिड़गिड़ाने अथवा हाथ फैलाने की

Scanned with CamScanner

इजाजत देता है। कवि मानव को हर स्थिति में स्वाभिमानी की भाँति सारी मजबूरियों को सहते हुए शेर की भाँति दहाड़ते रहने का संदेश देता है। कवि के अनुसार ऐसा काम वही कर सकता है, जिसमें स्वाभिमान हो। इसलिए कवि हमें मानव बनने के लिए प्रेरित करता है।

कवि कहता है कि कर्मवीर मानव को किसी बात पर दुःखी होना शोभा नहीं देता है। कवि अपनी पीड़ा की आँसू से सींचकर विश्व के कण-कण को हरा-भरा कर देने की सलाह देता है।

कवि कहता है कि समय बीत जाने पर पश्चाताप करना व्यर्थ है। समय रहते अपने अधिकार के प्रति सजग हो जाना लाभदायक होता है। जो व्यक्ति समयानुकूल आचरण करता है तो उससे समाज को एक नई शक्ति मिलती है। इसलिए कवि लोगों से आग्रह करता है कि तुम अपने कर्म या आचरण से लोगों के मन की गाँठ खोल दो, ताकि वह भी सामान्य मानव बन सके।

प्रश्नोत्तर —

प्र० 'मानव बनो' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर — 'मानव बनो' शीर्षक कविता

प्र० मानव बनने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?

उत्तर - मानव बनने के लिए हमें न तो किसी के समक्ष अपनी पीड़ा प्रकट करनी चाहिए और न ही किसी के समक्ष हाथ फैलाना चाहिए। हमें स्वाभिमानपूर्ण आचरण से संसार में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए। सभी को स्वाभिमानी की तरह जीने का प्रयास करना चाहिये।

प्र० - कवि के अनुसार व्यक्ति की सबसे बड़ी भूल क्या है?

उत्तर - कवि के अनुसार व्यक्ति की सबसे बड़ी भूल किसी पर निर्भर होना है। व्यक्ति को आत्मनिर्भर होना चाहिए क्योंकि परमुखापेक्षी व्यक्ति को सदा अपमानित जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

व्याकरण —

1. मुहावरे —

नाक का बाल होना (बहुत प्यारा) सचिन तेंदुलकर भारतीयों का ही नहीं विदेशियों के भी नाक का बाल है।

कान देना (ध्यान देना) मोहन शिक्षक की बातों पर कान नहीं देता है।

नाक रगड़ना (खुशामद करना) स्वार्थ पूर्ति हेतु सभी दूसरे के आगे नाक रगड़ते हैं।

दाँत निपोड़ना (लाचारी प्रकट करना) भिखारी दाँत निपोड़कर भीक्षा माँगते

आँखे लाल होना (क्रोधित होना) (4)
पुत्र को शैतानी करते देख पिता की आँखें लाल हो गई।

2. विलोम शब्द लिखें -
(क) फैलाना - समेटना
(ख) प्यार - तिरस्कार
(ग) मानव - दानव
(घ) भूल - सही।

2. नचिकेता

शब्दार्थ - सहस्त्रों = हजारों, पूर्व = पहले, अगाध = अथाह, निष्ठा - श्रद्धा, सिद्धहस्त = महारत, निष्फल = व्यर्थ, विवश = लाचार प्रकट = स्पष्ट,

प्रश्नोत्तर -

प्र० - नचिकेता कौन था ?
उत्तर - नचिकेता वाजश्रवा का पुत्र था।

प्र० - नचिकेता क्यों दु:खी हुआ, उसने अपने पिता से क्या कहा ?
उत्तर - नचिकेता अपने पिता की लोभ-प्रवृति को देखकर दु:खी हुआ, कारण कि पिता ने यज्ञ मे अपना सर्वस्व दान मे देने का निश्चय किया था लेकिन यज्ञ की अंतिम घड़ी में कमजोर बूढ़ी तथा दूध न देने वाली गायें ब्राह्मणो को दान मे देने लगे तो अपने पिता की लोभ-प्रवृति को देखकर नचिकेता अपने पिता से बोला पिताजी आपने तो कहा कि दान मे सबसे कीमती चीजें (5)
दी जाती है तो सबसे कीमती चीज तो आपका मैं हूँ। आप मुझे किसको दान में दे रहे हैं।

प्र० - नचिकेता यमपुरी क्यो गया ?
उत्तर - अपने पिता की आज्ञापालन करने के लिए नचिकेता यमपुरी गया।

प्र० - नचिकेता को यमपुरी के मुख्य द्वार पर क्यों रुकना पड़ा ?
उत्तर - नचिकेता को यमपुरी के मुख्य द्वार पर इसलिए रुकना पड़ा, क्योंकि उस समय यमराज कहीं बाहर गये हुए थे।

प्र० - नचिकेता ने पहला वर क्या माँगा ?
उत्तर - नचिकेता ने पहला वर यह माँगा कि पिताजी का उस पर से क्रोध शांत हो और उन्हें सर्वमेध यज्ञ का सुफल प्राप्त हो।

प्र० - नचिकेता ने दूसरा तथा तीसरा वर क्या माँगा ?
उत्तर - नचिकेता ने अपने दूसरे वर में यह माँगा कि देव, जिस विद्या से भय उत्पन्न न हो, वह विद्या मुझे प्रदान कीजिए। तीसरे वर में यह माँगा कि मुझे आत्मा का रहस्य समझाइये।

प्र० - किसने, किससे कहा ?
(क) मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा वत्स।
उत्तर - यह बात महर्षि वाजश्रवा ने अपने पुत्र नचिकेता से कहा, जब नचि

केता यमराज के पास जाने की (6)
अनुमति माँगी।
(ख) 'छोटा मुँह बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं।"
उत्तर- यह बात वाजश्रवा ने अपने पुत्र नचिकेता से कहा।
(ग) "आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है।"
उत्तर - यह बात नचिकेता ने अपने पिता वाजश्रवा से तब कहा, जब वाजश्रवा अपने पुत्र को यमपुरी जाने की आज्ञा देने से इनकार कर रहे थे।

व्याकरण -

1. पर्यायवाची शब्द लिखें -
पुत्र - वत्स, बेटा, तनय।
पिता - जनक, पितृ, तात।
यमराज - मृत्यु देव, कृतान्त, मृत्युपति
गाय - गौ, धेनु, सुरभि
साधु - सज्जन, सुहृद, सुशील

2. विलोम शब्द लिखें -
सत्य - असत्य, धर्म - अधर्म,
सहिष्णु - असहिष्णु, इच्छा - अनिच्छा
सम्पन्न - विपन्न।

3. देखिए, समझिए और लिखिए -
पितृभक्त - पितृ + भक्त
सहनशक्ति - सहन + शक्ति
मुखमंडल - मुख + मंडल
गौशाला - गौ + शाला
महायज्ञ - महा + यज्ञ
ब्रह्मवाक्य - ब्रह्म + वाक्य
कर्मनिष्ठ - कर्म + निष्ठ

आत्मज्ञानी - आत्म + ज्ञानी (7)

4. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें -
(क) जो पिता की भक्ति करता हो,
उत्तर - पितृभक्त।
(ख) जो सबकुछ जानता हो - सर्वज्ञ
(ग) जिसने आत्मा का रहस्य जान लिया हो - आत्मज्ञानी।
(घ) जिसने दृढ़ निश्चय कर लिया हो - दृढ़ निश्चयी।
(ङ) जो सहनशील हो - सहिष्णु।

3. पुष्प की अभिलाषा

कवि - माखनलाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ - चाह = इच्छा, अभिलाषा, सुरबाला = देवकन्या, गहना = आभूषण, बिंध = छेदकर, ललचाऊँ = आकर्षित करूँ, सम्राट = जिसके अधीन कई राजा होते हैं, शव = लाश, हरि = भगवान, देवों = देवता, सिर = मस्तक, इठलाऊँ = गर्व करूँ, घमंड करूँ, वनमाली = फुलवारी की देखभाल करने वाला, पथ = रास्ता, मार्ग, शीश = सिर, वीर = बहादुर।

अर्थ — पुष्प अपनी अभिलाषा प्रकट करते हुए कहता है कि वह न तो देवकन्या के गहनों में गुथा जाना चाहता है और न ही प्रेमी द्वारा बनायी गई माला में बिंधकर प्रियतम को ललचाना चाहता है।

Scanned with CamScanner

पुष्प अपनी अभिलाषा प्रकट करते हुए कहता है कि वह न तो सम्राटों के शव पर चढ़ाये जाने की इच्छुक है और न ही देवताओं के मस्तक के ऊपर चढ़ाये जाने का आग्रही है।

पुष्प माली से अपनी उत्कृष्ट कामना प्रकट करते हुए कहता है कि ओ माली! मुझे तोड़कर उस मार्ग पर फेंक देना, जिस मार्ग से देश के सच्चे सपूत अपनी मातृ-भूमि की अस्मिता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने जाते हों।

प्रश्नोत्तर —

प्र०- प्रस्तुत पाठ में 'मैं' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

उत्तर- प्रस्तुत पाठ में 'मैं' शब्द का प्रयोग देशभक्तों के लिए किया गया है।

प्र०- "हे वनमाली, मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक दो, जिस रास्ते से होकर अपनी मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वाले वीर जाते हैं।" उपर्युक्त भाव पाठ की जिन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त होती है, उन पंक्तियों को लिखें।

उत्तर- मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

प्र०- "भाग्य पर इठलाऊँ" का कौनसा अर्थ ठीक लगता है?

(क) भाग्य पर नाराज होना
(ख) भाग्य पर गर्व करना
(ग) भाग्य पर विश्वास न करना

उत्तर- (ख) भाग्य पर गर्व करना।

व्याकरण —

1. 'भाग्य' शब्द के पहले 'सौ' उपसर्ग लगाकर सौभाग्य बनाते हैं। इसी प्रकार निः, दुः, अन् उपसर्ग लगाकर प्रत्येक से दो-दो शब्द बनावें।

उत्तर- निः - निर्बल, निश्छल
दुः - दुर्बल, दुष्प्रचार
अन् - अनपढ़, अनुपयोगी।

4. दानी पेड़

लेखक - शेल सिल्वरस्टाइन

शब्दार्थ - रोज = नित्य, शाखा = पेड़ की डाली, छाँव = छाया, खुश = प्रसन्न, अधेड़ = जवानी के बाद की अवस्था, ठूँठ = पत्ती एवं टहनी विहीन पेड़, फौरन = तुरंत, शीघ्र, हालत = दशा, दम = ताकत, शक्ति, सुस्ताना = आराम करना।

प्रश्नोत्तर —

प्र०- पेड़ से सबकुछ लेने के बाद भी आदमी खुश क्यों नहीं था?

उत्तर- पेड़ से सबकुछ लेने के बाद भी आदमी इसलिए नहीं खुश था, क्योंकि बुढ़ापे के कारण उसके दाँत गिर गये थे, उसकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो चुकी थी। वह अपने जीवन से ऊब चुका था और आराम से बैठने तथा सुस्ताने के लिए जगह

Scanned with CamScanner

का अभाव था। अर्थात् संतोष (10)
अभाव के कारण वह खुश नहीं था,

प्र० - अपना सब कुछ दे देने पर भी पेड़ क्यों खुश था ?

उत्तर - अपना सब कुछ दे देने पर भी पेड़ इसलिए खुश था, क्योंकि उसने परमार्थ सेवा की थी। उसने अपना सबकुछ परोपकार में लगा दिया। वह इस बात पर प्रसन्नता अनुभव कर रहा था कि उसके जीवन का लोकोपकार में उपयोग हुआ है। इसलिए पेड़ खुश था।

प्र० - पेड़ ने आदमी के बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की किन-2 जरूरतों को पूरा किया ?

उत्तर - पेड़ ने आदमी की जरूरतों को पूरा किया, वे निम्न प्रकार हैं-

(i) पेड़ ने अपना सारा फल देकर लड़के को बहुत सी चीजें खरीदने जैसी जरूरतों को पूरा किया।

(ii) उसने युवक को घर बनाने के लिए अपनी शाखाएँ काट लेने को कहा।

(iii) अधेड़ उम्र के आदमी को मछली पकड़ने के लिए पेड़ अपना तना देकर नाव जैसी जरूरत को पूरा किया।

(iv) पेड़ ने थके हुए बूढ़े को आराम तथा सुस्ताने के लिए अपने ठूंठ पर शांति से बैठने के लिए जगह दी।

प्र० - पेड़ को दानी क्यों कहा गया है ? (11)

उत्तर - पेड़ को दानी इसलिए कहा गया है कि पेड़ ने अपना फल, डाली तथा तना देकर आदमी का उपकार किया। दूसरी बात यह है कि पेड़ अपना फल स्वयं नहीं खाता, वह दूसरों की क्षुधा शांति के लिए फलता है। इसकी छाया में लोग विश्राम करते हैं तथा लकड़ियों का उपयोग विभिन्न कार्यों में करते हैं, फिर भी पेड़ किसी से कुछ लेता नहीं है। इसलिए पेड़ को दानी कहा गया है।

प्र० - बड़ा होने पर लड़का दुःखी क्यों रहने लगा ?

उत्तर - बड़ा होने पर लड़का दुःखी इसलिए रहने लगा क्योंकि उसके बचपन की स्वतंत्रता, अर्थात् पेड़ पर चढ़ना, फूलों की माला बनाना, फल खाना, पेड़ के साथ लुका-छिपी का खेल खेलना तथा पेड़ की छाँव में सोना बंद हो गया। इसके अलावे वह विभिन्न प्रकार के पारिवारिक दायित्वों के बोझ के कारण दुःखी रहने लगा।

प्र० - खाली जगहों को भरें -

(क) पेड़ छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था।

(ख) वह पेड़ के साथ लुका-छिपी खेलता था।

(ग) मुझे पैसों की जरूरत है।

(घ) मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता हूँ

Scanned with CamScanner

व्याकरण (12)

प्र० - निचे दिये गये शब्दों का वाक्यों मे प्रयोग कर उनके लिंग बताइये:
शाखा (स्त्रीलिंग) - शाखा टूट गई।
आम (पुँलिंग) - आम मीठा होता है।
खिचड़ी (स्त्रीलिंग) - खिचड़ी पक गई।
रंग (पुँलिंग) - भैंस का रंग काला है।
बन्धु (पुँलिंग) - प्रिय बंधु। आपका तो दर्शनभीदुर्लभ हो गया है।

प्र० - निम्नलिखित वाक्य वर्तमानकाल मे है। इन्हें क्रमशः भूतकाल और भविष्यत् काल मे लिखिए।
(क) उत्तर - मुझे पैसो की जरुरत है। (वर्तमान)
मुझे पैसो की जरुरत थी। (भूत)
मुझे पैसों की जरुरत होगी (भविष्यत)
(ख) मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ। (वर्तमान)
मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। (भूतकाल)
मैं तुम्हें कुछ देना चाहूँगा। (भविष्यत्)
(ग) क्या तुम मुझे नाव दे सकते हो? (वर्तमान)
क्या तुम मुझे नाव दे सकते थे? (भूतकाल)
क्या तुम मुझे नाव दोगे? (भविष्यत्काल)

प्र० - कोष्टक मे दिये गये शब्दों मे से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए -
(क) युवक सभी शाखाओं को काटकर ले गया।
(ख) आदमी ने तना से नाव बनाई।
(ग) कई साल बीत गए।
(घ) वह फूलों की माला बनाता था।
(ङ) मुझे पैसों की जरुरत है।

5. वीर कुँअर सिंह (13)

शब्दार्थ - उड़ेला = उड़ता है, अवसर = समय-समय पर, शौर्य = वीरता, गाथा = कहानी, प्रतीक = चिन्ह, तोहरा = तुम्हारे, लहर = तरंग, सुरंग = धरती के अंदर सेहोकर आने-जाने के लिए बना रास्ता, अवशेष = बचा हुआ भाग, पहेली = बुझौवल, कहावत, रियासत = छोटा राज्य, हुकूमत = शासन, जुल्म = अत्याचार, चरम = बहुत अधिक, संकल्प = निर्णय, निश्चय, लोहा लेना = विरोध करना, शंखनाद = उद्घोष, तलाश = खोज, सलारवें = मोटी छड़ें, मनोबल = उत्साह, कीर्ति = यश, रण-कौशल = युद्धकला, अमरपुर = स्वर्ग, अरिदल = शत्रुदल, प्रसविनी = जन्म देनेवाली माता।

प्रश्नोत्तर

प्र० (1) वीर कुँअर सिंह से संबंधित किसी एक प्रसंग का उल्लेख कीजिए जो आपको अविश्वसनीय लगता है।
उत्तर - यह सामान्य धारणा है कि जो काम कोई स्वयं नहीं कर पाता है, यदि वह काम किसी के द्वारा किया जाता है तो अविश्वसनीय लगता है। मुझे भी वीर कुँअर सिंह से संबंधित यह प्रसंग अविश्वसनीय लगता है, जो निम्न प्रकार है -
"एक समय की बात है। एकबार अंग्रेज सैनिक वीर कुँअर सिंह का पीछा करते हुए गंगा नदी के तट पर पहुँच गई। कुँअर सिंह नाव मे सवार

होकर गंगा पार कर थे। अचानक (14) अंग्रेजों ने गोली चलायी, गोली कुँअर सिंह के बाँये हाथ में जा लगी। गोली का जहर पूरे शरीर में नहीं फैले, अतः बिना एक क्षण की देरी किए कुँअर सिंह ने अपनी तलवार से उस हाथ को काटकर गंगा में बहा दिया।"

प्र० (2) वीर कुँअर सिंह के जीवन से जुड़े कुछ घटनाक्रम तिथियों के साथ 'स्तंभक एवं स्तंभ ख' में दिये गये हैं, उनका सही-सही मिलान करें —

(i) वीर कुँअर सिंह द्वारा स्वाधीनता की विजय पताका फहराना — 23 अप्रैल 1858 ई०।

(ii) दानापुर सैनिक छावनी की सैनिक टुकड़ी द्वारा विद्रोह — 25 जुलाई 1857

(iii) वीर कुँअर सिंह की मृत्यु — 26 अप्रैल 1858

(iv) अँग्रेजी फौज द्वारा जगदीशपुर पर अधिकार — 13 अगस्त 1857।

(v) आरा पर विजय — 27 जुलाई 1857

प्र० (3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए —

(i) वीर कुँअर सिंह का जन्म कहाँ हुआ था,

उत्तर — वीर कुँअर सिंह का जन्म भोजपुर जिला के जगदीशपुर गाँव में हुआ था,

(ii) उनके माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर — उनके पिता का नाम साहबजादा सिंह तथा माता का नाम पंचरतन कुँवर था।

(iii) ब्रिटिश झंडे को किस नाम से जानते हैं?

उत्तर — ब्रिटिश झंडे को 'यूनियन जैक' कहते हैं।

(iv) वीर कुँअर सिंह ने अपनी रियासत (15) की जिम्मेवारी कब सँभाली?

उत्तर — वीर कुँवर सिंह ने अपनी मृत्यु के पश्चात् 1827 ई० में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।

(v) कुँवर सिंह को किस क्षेत्र में अधिक रुचि थी?

उत्तर — कुँवर सिंह को घुड़सवारी, तलवारबाजी तथा कुश्ती लड़ने में विशेष रुचि थी।

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए :

रियासत — राज्य.
झंडा — ध्वज
भूमि — जमीन
स्वतंत्र — आजाद
प्रतीक्षा — इंतजार
संकल्प — प्रण, निश्चय

Scanned with CamScanner

भाषा उच्चरित ध्वनि-संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा जिसकी मदद से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि-संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं-

(i) भाषा ध्वनि-संकेत - सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा ध्वनि संकेत कहते हैं। जैसे - रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलनेवाली है।

(ii) लिखित भाषा - जिस शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे- कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा - जिन शब्दों को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे - बच्चा, बूढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक (ँ) - ऐसे स्वरों का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे - गाँव, दाँत, आँगन आदि।

अनुस्वार (ं) - यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिनका उच्चारण करते समय नाक से अधिक तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे - अंश, हंस, अंगूर आदि।

निरनुनासिक - ऐसा स्वर वर्ण जिनका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली हुई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे - इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

वर्ण - वर्ण वह मूल ध्वनि है जिनका खंड या टुकड़ा नहीं किया जा सकता है। जैसे - अ, आ, इ, र इत्यादि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

(i) स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण स्वतः होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे, अ, आ, ---

स्वर वर्ण के भेद -

(i) ह्रस्व स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अति अल्प समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ, ऋ।

(ii) दीर्घ स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) प्लुत स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे- ओऽम। ॐ

व्यंजन वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे - क - ह।

व्यंजन वर्ण के भेद -

(i) स्पर्श व्यंजन - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे - क वर्ग से प वर्ग तक।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को 'अर्द्धस्वर' भी कहा जाता है। जैसे - य, र, ल, व।

Scanned with CamScanner

(iii) ऊष्म व्यंजन – वैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, स, ह ।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं —

(i) अल्पप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती हैं, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंत:स्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महाप्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं –

(i) अघोष वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होती हैं, उसे अघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, स ।

(ii) घोष वर्ण – वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती हैं, उसे घोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह ।

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह एक व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता जा रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे - पय:पान, प्रात:काल, अत: इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) – बोलते समय अर्थ या उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।

संगम – उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बिच जो विराम आता है, उसे संगम कहते हैं। जैसे - तुम्हारे, उत्पन्न इत्यादि ।

अनुतान – बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। जैसे - कौन करेगा, तथा करेगा कौन ?

लिपि – वर्णों को लिखने के लिए जिन सांकेतिक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - ा, ि, ी, ---

ध्वनि – भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी – वर्णों/शब्दों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं, जैसे - अं, अः ।

हल् - व्यंजन वर्णों के निचे जब एक तिरछी रेखा (्) लगाई जाती है, उसे हल् कहते हैं। हल् लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क्, ख्, ---

वर्ण-विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण-विच्छेद कहते हैं। जैसे - क - क्+अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - ङ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ -	अ, आ, क् ख्, ग्, घ्, ङ्	- कंठ्य वर्ण
तालु -	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	- तालव्य वर्ण
मूर्द्धा -	ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	- मूर्द्धन्य वर्ण
दंत -	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	- दंत्य वर्ण
ओष्ठ -	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	- ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु -	ए, ऐ	- कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ -	ओ, औ	- कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ -	व्	- दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका -	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	- नासिक्य वर्ण

Scanned with CamScanner

वर्ग - VII, VIII, IX, X

व्याकरण

(1)

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, पुस्तक, मेला, लड्डू इत्यादि।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं -

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, रामायण, हिमालय आदि।

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति भर का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पहाड़, गाय आदि।

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण / मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, घी, तेल इत्यादि।

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष, धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि।

(2)

सर्वनाम

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद -

(i) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, हम, तुम, वह इत्यादि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद -

(i) उत्तम पुरुष - वक्ता / बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे- तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वेलोग, यह, वे, ये इत्यादि।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह, इत्यादि।

Scanned with CamScanner

(ग) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कोई, कुछ आदि।

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है।

(ङ) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(च) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि।

विशेषण के भेद -

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे - काला, मोटा, गोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - तीन पुस्तकें, चार कलमें, दो आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आनेवाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया - जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे- वह पढ़ता है। मैं सोता हूँ।

क्रिया के भेद -

(i) सकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया -

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे - है, था, रहे, गा रहे हूत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया -

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम, मोहन से काम करवाता है।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आये हैं।

वाच्य के भेद -

(i) कर्तृवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे - लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे - धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण -

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे - राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

Scanned with CamScanner

लिंग

संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, कुत्ता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(i) पुँल्लिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँल्लिंग कहते हैं। जैसे - बालक, खटमल आदि

(ii) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँल्लिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँल्लिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल

(ख) हिन्दी के आकारांत शब्द पुँल्लिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि

नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय - आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - दया, माया, आज्ञा, घोषणा सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि। पूर्ति, नारी, गोष्ठी, मृत्यु, वस्तु, ऋतु, वायु आदि।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, आटा, आव, आवा, औड़ा, पन इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे पुँल्लिंग होते हैं। जैसे - महत्व, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सन्नाटा, बुढ़ापा, फैलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, घबराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, डफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँल्लिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ग, भिक्षा, शिक्षा परीक्षा इत्यादि

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्राय: तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे - आश्चर्य अचरज, संध्या - साँझ, स्वर्ण - सोना इत्यादि

(ङ) हिन्दी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुँल्लिंग होती हैं। जैसे - लोहा, चूना, मोती दही, घी, तेल, सोना इत्यादि।

अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग है।

वचन

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि

वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि।

वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं जैसे लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'अ' का लोप कर उसके स्थान पर 'एँ' लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि।

(iii) आकारान्त/उकारान्त/ओकारांत वाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद एँ लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, वधू - वधुएँ इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'आँ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगाता है तो अंतिम स्वर 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है। जैसे नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि।

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं। जैसे क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि।

(vii) लोग, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर, आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे

(viii) छाया, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, हवा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे कर्मचारीगण, शिक्षकगण, छात्रवृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ता है।

पद-परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात् विश्लेषण।

वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग कर उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बताना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तक पढ़ सकता हूँ।

Scanned with CamScanner

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद —

(i) कर्त्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे - तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से, द्वारा' होता है। जैसे - राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग के, के लिए, वास्ते, के हेतु होता

(v) अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से विरह, बिछुड़ना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग अर्थात चिन्ह का, की, के होता है। जैसे - मोहन की गाय।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - छत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग में, पर होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हो, अरे, ओ" होता है। जैसे हे, राम यहाँ आओ।

निबंध —

(i) बिहार पहले और अब
(ii) छात्र और अनुशासन
(iii) समय की महत्ता
(iv) दहेज प्रथा
(v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
(vi) आतंकवाद
(vii) बेकारी की समस्या
(viii) वृक्षारोपण
(ix) प्रदूषण
(x) खेल का महत्व
(xi) सामप्रदायिकता
(xii) बढ़ती हुई महँगाई
(xiii) नारी शिक्षा
(xiv) जनसंख्या विस्फोट
(xv) आदर्श छात्र
(xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
(xvii) स्वच्छता

नोट — विद्यार्थीगण उपरोक्त निबंध की तैयारी अपने अपने स्तर से करेंगे।

Scanned with CamScanner